प्रातःक्लास ओमशांति 21.9.67

रिकार्ड–तुम्हीं हो माता.....ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों ने गीत सुना। आत्माओं ने इन जिस्मानी कर्मइन्द्रियों से गीत सुना। गीत में तो पहले तो ठीक था। पिछाड़ी को फिर भक्ति की अक्षर थी। तुम्हारे चरणों की धूर.....अब बच्चे चरणों के धूर थोड़े ही होते हैं। यह रांग है। बच्चों को बाप आकर राइट समझाते हैं। बाप आते भी हैं वहां से जहां से बच्चे आते हैं। निर्वाणधाम से। बच्चों को सबके आने का समाचार तो सुनाया। अपना भी सुनाया है कि मैं कैसे आता हूं। आकर के क्या करते हैं। रामराज्य स्थापन करने अर्थ रावण पर जीत पहनाते हैं। बच्चे जानते रामराज्य और रावणराज्य इस पृथ्वी पर ही कहेंगे। अभी सारी पृथ्वी पर रावणराज्य है। फिर सारी पृथ्वी पर रामराज्य होगा। तुम अभी विश्व के मालिक बनते हो। आसमान,धरती ,सूर्य आदि सब तुम्हारे हाथ में आ जाते हैं। तो कहेंगे रावणराज्य भी सारे विश्व पर, फिर रामराज्य भी सारी विश्व पर। रावणराज्य में 500करोड़ है। रामराज्य में थोड़े होते हैं। फिर आस्ते2 वृद्धि को पाते हैं। रावणराज्य में बहुत वृद्धि होती है ;क्योंकि मनुष्य विकारी बन जाते हैं। रामराज्य में है निर्विकारी। मनुष्यों की ही कहानी है। तो राम भी बेहद का मालिक तो रावण भी बेहद का मालिक है। अभी कितने अनेक धर्म हैं। गाया हुआ है अनेक धर्मों का विनाश। इस समय अनेक आसुरी काम हैं। बाबा ने झाड़ पर भी सारा समझाया है। अब दशहरा आना है। रावण को फिर जलाते रहेंगे। वह है हद का जलाना। तुम्हारी बेहद की बात। रावण को भी सिर्फ भारतवासी ही जलाते हैं। जहां2 जास्ती भारवासी होंगे वहां जलावेंगे। वह है हद का दशहरा। दिखाते हैं लंका में रावणराज्य करते हैं और सीता को चुराय अपने लंका में ले गए। यह हो गई हद की बातें। अब बाप कहते हैं सारी विश्व पर रावण का राज्य है। राम का राज्य अब है नहीं। रामराज्य अर्थात् ईश्वर का स्थापन किया हुआ। सतयुग को कहा जाता है रामराज्य। माला सिमरते हैं ना। रघुपति राजा राम को नहीं सिमरते हैं। राजायें जो बनते हैं ,जो सारी विश्व की सेवा करते हैं उनकी माला सिमरते हैं। बाबा ने रुण्डमाला भी समझाई है। उनकी पूजा करते हैं। रुण्ड माला राज्य करते हैं। अब दशहरे का उत्सव आता है। फिर दीपमाला मनाते हैं। क्यों मनाते हैं ;क्योंकि देवताओं की ताजपोशी होती है। कोरोनेशन पर बत्तियां आदि बहुत जलाते हैं। एक तो ताजपोशी दूसरा फिर कहा जाता है घर2 में दीपमाला। हरेक आत्मा की ज्योत जग जाती है। अभी सब आत्माओं की ज्योत बुझी हुई है। आयरन एज्ड है। माना अंधियारा। अंधियारा माना भक्तिमार्ग। भक्ति करते2 ज्योति झकी(हल्की) हो जाती है। बाकी वह दीपमाला तो आर्टीफीशियल है। ऐसे नहीं कि कारवेन्शन होता है। इसलिए आतिशबाजी करते हैं। दीपमाला पर लक्ष्मी को बुलाते हैं। पूजा करते हैं। यह उत्सव है भक्तिमार्ग की। यह रांग है। जो भी राजा तख्त बैठते हैं उनका कारवेंशन डे मनाया जाता है धूम–धाम से। यह सब है हद के। अब तो बेहद का विनाश सच्चा2 दशहरा होना है। बाप आय सबकी ज्योत जगाने। मनुष्य समझते हैं हमारी ज्योत बड़ी ज्योति से मिल जावेगी। ब्रह्मसमाजी के मंदिर में सदैव ज्योत जगी रहती है। समझते हैं जैसे परवाने ज्योति पर फेरी पहन फिदा होते हैं,वैसे हमारी भी जो आत्मा है वह उस बड़ी ज्योत में मिल जावेगी। इस पर दृ ष्टांत बनाया है। अब तु हो आधा कल्प के आशुक। तुम आय एक माशुक पर फिदा हुए हो। जलने की बात नहीं। जैसे वह आशुक–माशुक होते हैं तो एक/दो के माशुक बन जाते हैं। यहां तो एक ही माशुक है। बाकी सब है आशुक। सभी आशुक उस माशुक को भक्तिमार्ग में याद करते रहते हैं। माशुक आप आओ तो तुम्हारे पर हम बलि चढ़ें। तुम्हारे सिवाय हम और किसी को याद नहीं करेंगे। यह तुम्हारी जिस्मानी लव नहीं है। उन आशुक–माशुक का जिस्मानी लव होता है। बस एक/दो को देखते रहते हैं। देखते ही जैसे तृप्ति हो जाती है। यहां है एक माशुक, बाकी सब आशुक। सभी बाप को याद करते हैं। भल कोई नेचर आदि को भी मानते हैं फिर भी हे गॉड, हे भगवान मुख से जरूर निकलता है। सब उनको बुलाते हैं। हमारी दुःख दूर करो। भक्तिमार्ग में तो बहुत आशुक–माशुक होते हैं। कोई किसका आशुक, कोई किसका आशुक। हनुमान के कितने आशुक होंगे ढेर। सभी

अपने2 आशुक के चित्र बनाय फिर आपस में मिल बैठ उनकी पूजज्ञ करते हैं। पूजा कर फिर माशुक को डुबोय देते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं मिलता। यहां वह बात नहीं। यह तुम्हारा माशुक एवर गोरा है। कब सांवरा बनता नहीं। बाप मुसाफिर आय सभी को गोरा बनाते हैं। तुम भी मुसाफिर हो ना। दूसरे देश से आकर यहां पार्ट बजाते हो। मनुष्य नाटक रचते हैं तो उस देश के उसी देश में ही पार्ट बजाते हैं। तुम दूसरे देश से नंगे आये हो। यहां आय पार्ट बजाया है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। अभी तुम त्रिकालदर्शी बन गये हो। रचता और रचना को जान गये हो। तुम हो आस्तिक ब्रह्माकुमार कुमारियां। वह हो गये नास्तिक कुमार और नास्तिक कुमारी। फिर रचता के आदि,मध्य,अंत को भी जानते हो। तुम तो हो गए त्रिकालदर्शी आस्तिक ब्रह्माकुमार–कुमारियां। जैसे जगदगुरू आदि का टाइटिल मिलता है ना। तुमको भी यह टाइटिल मिलती है। तुमको सबसे अच्छा टाइटिल मिलता है स्वदर्शन चक्रधारी। तुम्हारी बड़ी मर्तबा है ना। शिवबाबा को यह टाइटिल दे सकते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी तुम ब्राह्मण ही हो या शिवबाबा भी स्वदर्शन चक्रधारी हैं?(शिवबाबा भी है) हां ; क्योंकि स्वदर्शनचक्रधारी आत्मा होती है शरीर के साथ। बाप भी इसमें आकर समझाते हैं। शिवबाबा स्वदर्शनचक्रधारी न हो तो तुमको कैसे बनावेंगे?स्वदर्शनचक्रधारी माना सृष्टि के आदि,मध्य और अंत का फिर उनको ज्ञान है। बच्चे जानते हैं वह सुप्रीम उंच ते उंच आत्मा है। देह को थोड़े ही कहा जाता है। वह सुप्रीम बाप ही आकर तुमको सुप्रीम बनाते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी आत्माओं सिवाय और कोई बन न सके। कौन सी आत्माएं?जो ब्राह्मण धर्म में हैं। जब शूद्र धर्म में थे तो नहीं जानते थे। अभी बाप द्वारा तुमने जाना है। बाप तुमको भी स्वदर्शनचक्रधारी त्रिकालदर्शी बनाते हैं। कितनी अच्छी बातें हैं। तुम ही सुनते हो और खुशी होती है। बाहर वाले यह सुनु(सुनें) तो बहुत अजब खावें। ओहो, यह हो बहुत.....है। अच्छा, तुम भी ऐसा स्वदर्शनचक्रधारी बनो तो फिर चक्रवर्ती राजा विश्व का मालिक बन जावेंगे। वहां से बाहर गए ,खलास। माया बहुत बलवान है। यहां की यहां रही हो जाती। जैसे गर्भ से बच्चा इंजाम(प्रतिज्ञा) कर निकलते हैं। फिर भी वहां की वहां रह जाती है। तुम प्रदर्शनी आदि में समझाते हो बहुत अच्छा2 करते हैं। नालेज बहुत अच्छी है, मैं ऐसा पुरुषार्थ करुंगा, यह करुंगा। बस। बाहर निकला वहां की वहां रही ;परंतु फिर भी कुछ न कुछ असर रहता है। ऐसे नहीं कि वह फिर कब आवेंगे नहीं। फिर भी आवेंगे। झाड़ की वृद्धि होती जावेगी। झाड़ वृद्धि को पावेगा तो फिर सबको खैंचेंगे। अभी तो यह है ही वैश्यालय। रौरव नर्क। गरूड़ पुराण में भी ऐसी2 बातें लिखी हुई हैं। रोचक बातें मनुष्यों को सुनाते हैं कि कुछ डर रहे। उनसे ही निकला है मनुष्य बिच्छू–टिंडन बनते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको अब विषय वैतरनी नदी से निकाल तुमको क्षीर सागर में भेज देता हूं। यह भी अच्छी रीति समझना है। हम असल शांतिधाम के निवासी थे। फिर सुखधाम में पार्ट बजाने आये। अभी हम फिर जाते हैं शांतिधाम–सुखधाम। यह धाम तो याद करेंगे ना। गाते भी हैं तुम मात–पिता.....तुमरी कृपा ते सुख घनेरे। वह सुख घनेरे तो होता ही है सतयुग में। यह है संगमयुग। यहां पिछाड़ी में मनुष्य तराह2(त्राहि2) करेंगे;क्योंकि अति दुःख होना है। फिर सतयुग आदि में अति सुख होगा। अति सुख और अति दुःख का खेल बना हुआ है। विष्णु अवतरण भी दिखाते हैं। लक्ष्मी–नारायण का जोड़ा जैसे उपर से आती है। अब उपर से कोई आते थोड़े ही हैं। श्रीकृष्ण का अवतरण भी उल्टा बताया है। उपर से आती तो हरेक आत्मा है ;परंतु ईश्वर का अवतरण बहुत विचित्र है। वह ही आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं ;परंतु इनका त्योहार मनाते नहीं। अगर मालूम हो तो परमपिता परमात्मा ही मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा देता है तो सारी विश्व में गॉड फादर का त्यौहार मनाते। बेहद के बाप का मनावे तब समझे कि शिवबाबा ही लिबरेटर,गाइउ है। उनका जन्म ही भारत में होता है। शिव जयंती भी भारत में ही मनाते हैं ;परंतु पूरी पहचान नहीं है तो हॉली डे भी नहीं करते। जब बाप सर्व की सदगति करने वाला है उनकी जन्मभूमि, जहां अलौकिक कर्तव्य करते हैं उनका

जन्मदिन और तीर्थयात्रा तो मनानी चाहिए। तुम्हारा यादगार मंदिर भी यहां ही है ;परंतु किसको पता नहीं है कि शिवबाबा ही आकर लिबरेटर गाइड बना है। कहते भी हैं सब दुःख से छुड़ाय सुखधाम में ले जाते हैं ;परंतु समझते नहीं है। परमात्मा को सर्वव्यापी कहने से गीता को खंडन करने से कितना महत्व उड़ गया है ;परंतु यह भी ड्रामा में बना हुआ है। भारत बहुत उंच ते उंच खंड है। भारत की महिमा अपरमअपार गाई जाती है। वहां ही शिवबाबा का जन्म होता है। इसको कोई जानते नहीं हैं। स्टैम नहीं बनाते। औरों की तो बहुत बनाते रहते हैं। अब कैसे समझाया जाये तो इनके महत्व का दुनियां में सबको पता पड़े। विलायत में भी जहां सन्यासी आदि जाय भारत का प्राचीन योग सिखलाते हैं। जब तुम यह राजयोग बतावेंगे तो तुम्हारा बहुत नाम होगा। बोलो राजयोग किसने सिखाया था यह किसको भी पता नहीं है। कृष्ण ने भी तो हठयोग सिखाया नहीं। यह हठयोग है ही सन्यासियों का। जो अच्छे2 पढ़े–लिखे होते हैं,जो अपन को फिलासफर आदि कहलाते हैं। बहुत शास्त्र पढ़े हुए हैं वह इन बातों को समझ और सुधर जाये, कहें हमने भी शास्त्र पढ़ा ;परंतु अभी बाप जो सुनाते हैं वह राइट है। बाकी सब रांग है। तो यह समझे कि बरोबर बड़े ते बड़ा तीर्थस्थान तो यह है जहां बाप आते हैं। तुम बच्चे जानते हो इसको कहा जाता है धर्मभूर्मि यहां जितने धर्मात्मा रहते हैं उतना और कहीं नहीं। तुम कितना धर्म करते हो। बाप को जानकर तन,मन,धन सब इस सेवा में लगाय देते हो। बाप ही इसका लिबरेटर है। सबको दुःख से छुड़ाते हैं और धर्मस्थापक कोई दुःख से नहीं छुड़ाते। वह तो आते हैं उनके पिछाड़ी। नम्बरवार सब पार्ट बजाने आते हैं। पार्ट बजाते2 तमोप्रधान बनते हैं। फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते हैं। तो यह भारत कितना बड़ा तीर्थ है। यह किसको पता नहीं है कि यह भारत सबसे नम्बरवन उंच भूमि है। बाप कहते हैं मेरी यह जन्मभूमि है। मैं आय सबकी सदगति करता हूं। भारत को हेविन बनाय देता हूं। तुम जानते हो बाप स्वर्ग का मालिक बनाने आये हैं। ऐसे बाप को बहुत प्यार से याद करो। तुमको देख और भी ऐसे करेंगे। इनको ही कहा जाता है दिव्य अलौकिक कर्म। ऐसे मत समझो कि कोई नहीं जानेंगे। ऐसे निकलेंगे कि तुम्हारे यह चित्र भी ले जावेंगे। अच्छे2 चित्र बने तो ले जावेंगे। स्अीम्बर....कर ले जावेंगे। स्टीम्बर जहां2 खड़ा रहता है वहां यह चित्र लगाय देंगे। तुम्हारी बहुत सर्विस होनी है। ढेर चित्र बनेंगे। बहुत उदारचित हुण्डी सकारने वाले सांवलशाह की निकलेगी। ऐसे2 काम करने लग पड़ेंगे ताकि सबको मालूम पड़े कि यह कौन है, जो इस पुरानी दुनियां को बदल नई दुनियां स्थापन करते हैं। तुम्हारी भी पहले तुच्छ बुद्धि थी। अभी तुम कितने स्वच्छ बुद्धि बनते हो। जानते हो हम इस ज्ञान और योगबल से विश्व को हेविन बनाते हैं। बाकी सब मुक्तिधाम में चले जावेंगे। तुमको भी अथॉर्टी बनना है। बेहद के बाप के बच्चे हो ना। सर्वशक्ति मिलती है याद से। बाप को वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी कहा जाता है। सभी वेदों, शास्त्रों का सार बताते हैं। इसलिए इनको शास्त्रों की अथॉर्टी कहा जाता है। तो बच्चों को कितना उमंग रहना चाहिए सर्विस का। मुख से सिवाय ज्ञान रत्नों के और कुछ न निकले। तो हरेक बसंत हो। तुम देखते हो सारी दुनियां कितनी सब्ज बन जाती है। सब कुछ नयां वहां दुःख का नाम नहीं। 5तत्व भी तुम्हारे सर्विस में हाजिर रहती है। अभी वह डिससर्विस करती है ;क्योंकि लायक नहीं हो। नालायक हो। रावण ने नालायक बनाया है। बाप लायक बनाते हैं। बाप तुम्हारा गाइड बना है। जहां ले जाते हैं उसका भी तुमको सा. हुआ है। मनुष्य तो न घर को जानते हैं, न बाप को जानते हैं। जो कुछ नहीं जानते उनको तो कहा जावेगा यह तो जैसे जट है। जट उनको कहते हैं जो उंट को चलाते हैं। आत्मा भी जट शरीर रथ को चलाने नहीं जानती। रावण कितना जट बनाय देते हैं। आत्माभिमानी से देहाभिमानी बनाय देते हैं। बॉडीकांन्सेस से तुम क्या बन जाते हो। सोल कांसेस से तुम क्या बनते हो। कितना फर्क है। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। अच्छा जी, अब विदाई। ओम।